ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्...
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 अगस्त 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-८८, वर्ष-१०
भाद्रपद मास, विक्रमी २०७४ (अगस्त 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते॥ –ऋ० १। १। ९। २

व्याख्यान- हे परात्पर परमात्मन्! आप (पुरूतमम्) अत्यन्तोत्तम और सर्वशत्रुविनाशक हो। तथा [(पुरूणाम्)] बहुविध जगत् के पदार्थों के (ईशानम्) स्वामी और उत्पादक हो। (वार्याणाम्) वर, वरणीय, परमानन्द मोक्षादि पदार्थों के भी ईशान हो। और (सोमे) उत्पत्तिस्थान संसार आप से [(सुते)] उत्पन्न होने से [(सचा)] प्रीतिपूर्वक [हम] (इन्द्रम्) परमैश्वरर्यवान् आपको (अभिप्रगायत*) हृदय में अत्यन्त प्रेम से गावें, यथावत् स्तुति करें। जिससे आपकी कृपा से हम लोगों का भी परमैश्वर्य बढ़ता जाये, और [हम] परमानन्द को प्राप्त हों।।

सम्पादकीय

अन्धविश्वास का आतंक

देश में विषम मानसून चल रहा है, कुछ क्षेत्रों में अनावृष्टि का प्रकोप जारी है तो राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर गुजरात के अनेक जनपदों में व असमादि पूर्वोत्तर में अतिवृष्टि से बाढ़ के कारण सैकड़ों लोग कालकवलित हुए हैं, हजारों लोगों का घर-द्वार उजड़ गया और असहाय दीन-हीन अवस्था को प्राप्तकर दारुण दु:ख भोगने को विवश हैं, प्राकृतिक प्रकोप का आतंक भुलाये नहीं भूल पा रहे हैं। दूसरी ओर कश्मीर में आतंकी आकाओं का नित नया-नया उद्घाटित हो रहा सत्य देश के निवासियों को आश्चर्य चकित कर रहा हैं कि कश्मीरियत के नाम पर निरीह बालकों के हाथों में बन्दूकें और बम्ब पकड़वाने वाले लोग हजारों करोड़ रुपयों की चल-अचल सम्पत्ति के स्वामी बनकर नित नये षड्यन्त्र रचते रहे हैं। तीसरी ओर हिमालय पर्वत श्रृंखला के दूसरी ओर चीन भूटान की सीमा के भीतर जाकर हमारी संवेदनशील सीमाओं को अपने नियन्त्रण में रखने का षडयन्त्र रच रहा है, डोकलाम में सेनाएं आमने-सामने सीना तानकर खड़ी हैं, हमारी सरकार कूटनीतिक माध्यमों से अपनी सीमाओं की सुरक्षा के साथ-साथ भूटान की सीमाओं को भी सुरक्षित देखना चाहती है। लेकिन चीन का तानाशाही नेतृत्व भारत के सत्प्रयासों के विपरीत षड्यन्त्रपूर्वक उग्रता पर उतारू हो रहा है, भारत को भड़काने का हरसम्भव प्रयास करते हुए सम्पूर्ण हिमालयी सीमा पर आक्रामक दबाव बढ़ाता ही जा रहा है, फिर भी देश के सैनिक भूपिपासु क्रूर चीनी सैनिकों के सम्मुख निर्भय होकर सीना तानकर खड़े हैं। अपने प्राणों से अधिक हमारे वीर सैनिकों को अपनी मातृभूमि से प्यार है, अपने सवा सौ करोड़ देशवासियों के सुखी जीवन के लिए बलिदान होना गौरव का विषय रहा है और आज भी है। हम ऐसे सैनिकों को नमन करते हैं।

किन्तु दु:ख पूर्वक कहना पड़ रहा है कि जिस देश के सैनिक शत्रु सेनाओं के सामने निर्भय होकर सीना ताने खड़े हैं, जिन सवा सौ करोड़ देशवासियों के जीवन को भयरहित देखने के लिए खड़े हैं, वे देशवासी अपने-अपने घरों में सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहे हैं, भयाक्रान्त हैं, आतंकित हैं। प्रश्न उठता है, किससे? जब सैनिक सुसज्जित प्राणों की बाजी लगाये खड़े हैं और अभी तक एक भी मोर्चे से कोई अप्रिय समाचार नहीं आया है, तब किससे भयाक्रान्त हैं? किससे इतने आतंकित हैं? कि-अपने ही घरों के भीतर भी रातों को सोते-सोते उठ बैठते हैं, चीखने-चिल्लाने लगते हैं, मूर्च्छित हो जाते हैं, चिकित्सालायों में भर्ती कराना पड़ता है, मनोरोग चिकित्सकों को दिखाना पड़ता हैं। घर के बाहर नीम्बू, मिर्च, हाथ के छापे, नीम की टहनियाँ लगाकर सुरक्षा के उपाय करने में लगे हैं, किन्तु फिर भी आतंक दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा हैं। आखिर किसका आतंक हैं? तो उत्तर एक है- चोटी कटने का।

पाठक गणों! यह आतंक पहली बार नहीं है, पहले भी था, हमारे देश में कुछ सौ वर्ष पूर्व गुलामी के काल में एक शासक हुआ औरंगजेब, जो सारे भारत वर्ष में निवासियों को मुसलमान बनाने की सनक लिये हुए था, प्रतिदिन

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

सैकड़ों-हजारों लोगों के यज्ञोपवीत उतरवाकर, चोटी कटवाकर लोगों को मुसलमान मौलवियों के द्वारा कलमा पढ़वाता था और उन्हें मुसलमान बनवाता था, जो यज्ञोपवीत न उतारते, चोटी न कटवाते उनके गले कटवा देता था। चारों ओर, त्राहि-त्राहि मची थी, जो कोई अधिक विद्वान, समाज का मार्ग दर्शक होता तो उसकी मृत्यु भी उतनी ही भयानक बना दी जाती थी, खौलते तेल के कडाहों में डाल देना, खड़े करके आरों से चीर देना, प्रज्वलित अग्नि के ऊपर उल्टा लटका देना आदि न जाने क्या-क्या क्रूर कर्म कराया करता था। उसके सामन्त उसे प्रसन्न करने के लिए उससे भी अधिक क्रूर हो चले थे किन्तु तब भी हमारे पूर्वजों ने संघर्ष किया, यातनाएं सहीं, दृढ़ रहे, अपनी परम्परा और अपना धर्म न छोड़ा, अपने धार्मिक चिह्नों तक का परित्याग अपने आप न किया। यह तो था वास्तविक आतंक, परन्तु अब घर-घर में जो आतंक व्यापक है वह निरा अंधविश्वास है।

लेकिन यहाँ अब वर्त्तमान में जो बन्द दिवारों के भीतर चोटी कट रही हैं, यह कौन काट रहा है? कैसे काट रहा है? क्यों कोई रूह आत्मा है? कोई भूत या प्रेत है? कोई अदृश्य शक्ति है? या कोई चमत्कार? आइए कुछ विश्लेषण करते हैं। हमारी सनातन वैदिक परम्पराओं में आत्मा दो ही प्रकार से कार्य करने में समर्थ होती है- एक शरीर धारण कर, दूसरा-प्रबल पुरूषार्थ से विवेक-वैराग्य युक्त होकर उपासना-साधना-समाधि द्वारा कैवल्य प्राप्त कर, परमात्मा प्रसाद से मोक्ष अर्थात् परमात्मा के आनन्द में मग्न होकर। पहली परिस्थिति- शरीर धारण में वह दो प्रकार के शरीर धारण करता है, एक स्थूल अर्थात् जो शरीर हमें चक्षु इन्द्रिय आँख से दिखते हैं, कृमी-कीट से लेकर मनुष्य, हाथी ह्वेल तक। दूसरे वे सूक्ष्म शरीरधारी भी हैं, जिनका शरीर तो है किन्तु इतना सूक्ष्म है कि हमे चक्षु से दिखता ही नहीं, जैसे कीटाणु वाइरस।

इनमें से जो कीटाणु, रोगाणु उत्पन्न करते हैं, करने में सक्षम होते हैं उन्हें चिकित्सा द्वारा औषधियों के उपचार से ठीक करते हैं, कुछ बहुत थोड़े ही असाधय रोग ऐसे हैं, जिन रोगाणुओं को हम समूल नष्ट नहीं कर पाते हैं जैसे-अर्बुद कैंसर आदि, और तब शरीर छोड़कर परमात्मा की व्यवस्था से अपने कर्मफलानुसार दूसरा शरीर धारण करता है। एक शरीर को छोड़ने और दूसरे शरीर के धारण के मध्य वह आत्मा न किसी का कुछ बना सकता है न बिगाड़ सकता है। चोटी तो छोड़ दीजिए, एक बाल भी तोड़ नहीं सकता।

दूसरी अवस्था जो मोक्ष की है उस अवस्था में आत्मा, परमात्मा के आनन्द साम्राज्य में विचरण करता है, कोई भी राग-द्वेष, सुख-दु:खादि के उत्पन्न करने वाले कर्म नहीं कर सकता। यह है हमारी करोड़ों वर्षों से चली आयी सत्य सनातन वैदिक शाश्वत दार्शनिक मान्यता, परम्परा, सत्य सिद्वान्त। अन्य जो काल्पनिक रूह, भूत-प्रेतादि के गपोड़े हैं ये पुराण, कुरान एवं बाइबिल आदि अवैज्ञानिक, मूढ़मान्यताओं से भरे पड़े पुस्तकों की देन हैं, जो हजारो वर्षों की अज्ञानियों, जंगली मूर्ख लोगों की गुलामी से जन-जन में फैल गये हैं।

अत: निश्चित जानिए यह अन्धविश्वास का आतंक है। कुछ चोटी स्वयं काट रहे हैं, कुछ के सम्बन्धी पति, बेटे, पोते आदि काट रहे हैं और कुछ शरारती-उपद्रवी लोग काट रहे हैं। बिना कारण संसार में कोई भी कार्य नहीं होता है, न पहले हुआ है, न भविष्य में कभी होगा। कार्य हुआ है, तो कारण भी अवश्य है। बाल कटे हैं तो काटने वाला भी है। लेकिन न तो चमत्कार है, न रूह, न भूत-प्रेत। अन्धविश्वास का आतंक है। और हमें इसे ही मिटाना है। तो आइए आर्य सिद्धान्त धारण कर इससे बचिए और बचाइए!

आर्य प्रचारक कक्षा के लिए पंजीकरण

कलियुगाब्द 5118 (सन् 2017-18) के सत्र के लिए आर्य प्रचारकों का पंजीकरण व प्रारभिक परिचय कक्षा दिनांक 03 सितम्बर 2017 को गुरुकुल में प्रात: 10 बजे से सांय 4 बजे तक होगी। दिल्ली प्रान्त के जिन आर्यों को इसके लिए पंजीकरण करवाना है वे उस दिन गुरुकुल में समय से पहुँचे। जिन आर्यों का पंजीकरण गत वर्ष हो चुका है और उन्होंने पाठ्यक्रम पूरा नहीं किया उन्हें भी पुन: शुल्क सहित पंजीकरण करवाना होगा। जो आर्य प्रचारक का पाठ्यक्रम पूरा कर चुके हैं वे अपने क्षेत्र से इसके लिए अन्य आर्यों को पंजीकरण के लिए भेजें या स्वयं लेकर पहुँचे।

पंजीकरण के लिए दो फोटो व एक पहचान पत्र की प्रतिलिपी तथा पंजीकरण शुल्क (500 रुपये) सहित उपस्थित हों।

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय

आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-८१

केन्द्र संचालक- आचार्य सतीश जी-9350945482

देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तब आर्य्यावर्त्त व अन्य भूगोल-देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न, रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारनेवाले मद्याहारी राज्याऽधिकारी हुए हैं, तब से क्रमश: आर्य्यों के दु:ख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि -**नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।** जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल-फूल कहाँ से हों?

-ऋषि दयानन्द

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	7 अगस्त	दिन-सोमवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-श्रवण
अमावस्या	21 अगस्त	दिन-सोमवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-आश्लेषा
पूर्णिमा	6 सितम्बर	दिन-मंगलवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-शतभिषा
अमावस्या	20 सितम्बर	दिन-बुधवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उ. फाल्गुनी

प्रतीकों में उलझते सिद्धान्त

-आचार्य सतीश जी

हमारे शास्त्र निर्देश देते हैं कि **'लिगं न धर्म कारणं'** अर्थात् प्रतीक चिह्न धर्म का मूल नहीं हैं। इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने प्रतीकों की संख्या को अत्यन्त ही न्यून रखा और उनके लिए भी उपरोक्त निर्देश दे दिया। देखा जाए तो वैदिक ऋषियों के द्वारा आर्यों को केवल दो ही प्रतीक चिन्ह दिए गए-शिखा और यज्ञोपवीत। ये प्रतीक भी चतुर्थ आश्रम में त्याग देने के निर्देश हैं। अर्थात् प्रतीकों को सीमित महत्व देते हुए धर्म का मूल सिद्धान्त को रखा गया, उसे आचरण व व्यवहार में सम्मिलित करने पर जोर दिया गया।

आइये अब देखते हैं कि कालान्तर में किस प्रकार जब हम आर्य सिद्धान्तों से दूर होने लगे और दूर होते चले गए तो प्रतीकों का महत्व बढ़ता चला गया और सिद्धान्त व उत्तम आचरण सिमटता चला गया। हमारे राष्ट्र में ही जब आर्य विद्या का प्रचार-प्रसार कम हो गया तो सिद्धान्त व आचरण छोड़कर लोगों ने उसके लिए कोई न कोई प्रतीक चिह्न बना लिया और उसी को अपनाकर कर्तव्य की पूर्ति समझ ली गई। अर्थात् वह प्रतीक जिस सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है वह सिद्धान्त और उस पर आचरण किस प्रकार से हो इसको न विचार कर केवल प्रतीक को अपनाकर इतिश्री करली और सिद्धान्त रह गए केवल ग्रन्थों तक। इतना ही नहीं धीरे-धीरे स्थिति यहाँ तक पहुच गई कि लोग जिस सिद्धान्त के प्रतीक को अपनाते, आचरण उसके विपरीत करते क्योंकि इसके पीछे सिद्धान्त क्या है यह पता ही नहीं। तो ऐसी स्थिति में सिद्धान्त का पालन और उस पर आचरण होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

प्रतीक चिह्नों के रूप में प्रारम्भ में ईश्वर के विभिन्न गुणों के आधार उसके प्रतीक बनाए गए और उस आधार पर अनेकों देवी-देवताओं का उदय हुआ। इसका परिणाम यह हुआ की सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर की उपासना छूट कर उसके एक गुण के आधार पर बनाए गए प्रतीक चिन्हों के रूप में विभिन्न देवी-देवताओं को ही उपास्य देव बना दिया, परिणाम स्वरूप न केवल मूर्ति पूजा रूपी रोग बढ़ा अपितु परमात्मा के वास्तविक स्वरूप से ही दूर हो गए। वास्तविक स्वरूप के रूप से परमात्मा की उपासना ही समाप्त ही हो गई और उसके नाम पर अनेकों कर्मकाण्डों का रूप देकर धर्म को उन कर्मकाण्डों में ही उलझा दिया।

इसके बाद स्थिति यह बन गई कि प्रत्येक सिद्धान्त के लिए प्रतीक बना लिए गए। कहीं प्रतीक रूप में उपवास, कहीं प्रतीक रूप में कोई धागा, कहीं प्रतीक रूप में कोई स्थान, कहीं कोई जल स्रोत, कहीं कोई वृक्ष, कहीं कोई परिक्रमा, कहीं कोई दिन विशेष आदि आदि अनेकों ऐसे प्रतीक बनते चले गये कि प्रत्येक दिन, प्रत्येक स्थल, प्रत्येक क्रिया किसी न किसी सिद्धान्त के पालन व उसके आचरण पर ध्यान न देकर केवल उस प्रतीक का ही महत्व रह गया। इसी परम्परा में अनेकों काल्पनिक परम्पराएं भी बन गयी, अनेक वैदिक परम्पराओं का स्वरूप भी बिगड़ा। वर्तमान में समाज में किस प्रकार इन प्रतीक चिह्नों की स्थिति है इसे समझने का प्रयास एक उदाहरण के माध्यम से करते हैं।

श्रावणी पर्व का स्वरूप बिगड़कर रक्षा बन्धन का त्यौहार बन गया। विद्या के महत्व के पर्व के स्थान पर केवल भाई-बहन का त्यौहार बन गया। यह एक सिद्धान्त है कि प्रत्येक पुरुष का यह कर्तव्य है कि समाज में नारियों पर अत्याचार न हो, उनका शोषण न हो अर्थात् प्रत्येक नारी की रक्षा हो। वैसे नारी की रक्षा की अलग से आवश्यकता भी तभी पड़ती है जब समाज में विकृति आ जाती है। युवा संस्कारविहीन हो जाते हैं, सिद्धान्तों का समाज में पालन नहीं किया जाता। खैर जो भी हो अब परिस्थितियां वैसी नहीं है तो रक्षा का दायित्व तो बनता ही है और सबसे अधिक दायित्व बनता है युवाओं का। उसी के प्रतीक रूप में राखी बान्धकर, बन्धवाकर बहन की रक्षा का प्रण लिया जाता है। वर्तमान में तो किस प्रकार इस परम्परा का भी उपाहरों के रूप में व्यापारीकरण हो चुका है, वह विषय तो अलग है लेकिन नारियों की, बहनों की रक्षा कैसे हो? इस पर विचार करने की अपेक्षा केवल राखियां बान्धकर या बन्धवाकर इतिश्री समझ ली जाती है। इस पर विचार नहीं होता है कि कैसे समाज में परिवर्तन लाया जाये, अपितु रह जाता है केवल खाना-पीना, मौज-मस्ती। और इसी का परिणाम देखने को मिलता है जब रक्षा बन्धन के दिन भी अनेकों युवक हाथों में राखियां बन्धवाए शराब के ठेकों पर लाईन लगाए दिखते हैं। अनेकों शराब पीकर घर में पत्नियों को मारते-पीटते हैं, उनसे भाइयों के द्वारा दिये पैसे तक छीन लेते हैं, क्योंकि उन्होंने तो समझ लिया कि राखी बन्धवायी और बहन की रक्षा का कार्य पूरा और कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं। अर्थात् जब यह निश्चित है कि बिना समाज को संस्कारित किये, युवाओं को चारित्रिक रूप से सक्षम बनाए नारियों की रक्षा नहीं हो सकती तो बहनों की रक्षा का प्रण लेने वाले इन सब पर विचार किए बिना, इस कार्य को किये बिना कैसे अपने संकल्प को पूरा करेंगे, संभव ही नहीं है और इससे सिद्धान्त की बहुत बड़ी हानि होती है, केवल प्रतीक रह जाता है और सिद्धान्त उसी प्रतीक में ऐसा उलझ जाता है कि न सिद्धान्त बचता है और न आचरण और न उसकी रक्षा के उपाय।

हाँ जो सिद्धान्त को समझते हैं उसके महत्व को समझते व प्रतीक को अपनाते हुए भी उसके लिए कार्य करते हैं उनकी बात अलग है। हम सब आर्यों का कर्तव्य बनता है कि जो सीमित प्रतीक हमारे ऋषियों ने हमें दिये हैं इन्हें दृढ़ता पूर्वक धारण करते हुए सिद्धान्तों को समझते हुए उन्हें प्रतिस्थापित करने का प्रयास करते रहें।

संध्या काल

भाद्रपद मास, शरद ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(8 अगस्त 2017 से 06 सितम्बर 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

आश्विन मास, शरद ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(7 सितम्बर 2017 से 05 अक्टूबर 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

धर्मसंस्थापक श्रीकृष्ण का वास्तविक चरित्र

-आचार्य जितेन्द्र, महासचिव, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

हमारा देश सारे संसार में बहुत अधिक पर्वों को मनाने वाले देश के नाम से विख्यात है। वर्ष में दिन हैं 365 और हमारे पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पर्व हैं 412 अर्थात् प्रतिदिन कम से कम एक पर्व तो सम्भावित है। विदेशी विस्मय करते हैं कि क्या ऐसा हो सकता है और उनका यह संशय या उपहास इस कारण से है क्योंकि उन्हें हमारी उच्च संस्कृति और जीवन पद्धति का बोध ही नहीं है।

यह ठीक है कि इस राष्ट्र के नागरिक हर दिन कोई न कोई पर्व मनाते आये हैं क्योंकि पर्व का वास्तविक अर्थ है "प्रसन्नता देने वाला" और सभी भारतीय तो अपनी श्रेष्ठ विद्याओं और परम्पराओं के कारण दिनों दिन सुख समृद्धिशाली जीवनयापन करने के अभ्यस्त रहे हैं। पर्वों का आयोजन तो उस प्रसन्नता को प्राप्त करने का एक साधन है। पर्वों के माध्यम से हम अपने महान् पूर्वजों के जीवन चरित्र का अध्ययन कर उन्हें जीवन में उतारने का प्रयत्न करते रहे हैं और अन्ततः इस प्रकार जीवन के लक्ष्य की ओर निरन्तर उनकी तरह बढ़ते हुए अभ्युदय ओर निःश्रेयस की अभिवृद्धि करते रहते थे। यही कारण है हमारे जीवन में पर्वों का सदा विशेष स्थान रहा है तथा इन्हें बड़े उत्साह से मनाने की परम्परा हमारे समाज में काफी प्राचीन समय से है।

ऐसा ही एक प्रेरणादायक पर्व भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को आता है। यह है धर्म संस्थापक श्री कृष्ण महाराज का जन्मदिन जिसे हम जन्माष्टमी के नाम से जानते हैं। कुछ लोग उस दिन पूर्ण उपवास रखकर श्री कृष्ण का स्मरण करते हैं तो कुछ उनके लिये मंदिरों को खूब सजाते हैं। स्थान-स्थान पर इस दिन झांकियों द्वारा श्रीकृष्ण के विशेष कृत्यों को प्रस्तुत किया जाता है। बहुत लोग उस दिन वृन्दावन, मथुरा आदि "तीर्थ स्थलों" पर पहुँच श्री कृष्ण के प्रति अपनी आस्था का परिचय देते हैं। बड़े-बड़े मंदिरों और पूजास्थलों पर भजन संध्याओं एवं रामलीलाओं का भव्य आयोजन भी किया जाता है और इन सब का लक्ष्य होता है किसी न किसी प्रकार से श्री कृष्ण की लीलाओं को अच्छी तरह प्रचारित-प्रसारित करना। प्रति वर्ष इतने बड़े-बड़े उपकर्म करते हुये व देखते हुए भी यहां भारतवर्ष में निरन्तर सुख की अपेक्षा अवनति व दुःख बढ़ता जा रहा है जो यह दर्शाता है कि पर्व निश्चित रूप से अब प्रसन्न्ता देने वाले नहीं रहे। तब यह विचारणीय विषय बन जाता है कि क्या तथाकथित कलियुग में यह उत्सव अपने मूल उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल नहीं हो रहा है, तो क्यों? दूसरे शब्दों में कहें तो देखना यह है कि इस प्रकार की सभाओं, झांकियों, लीलाओं, गीतों, प्रवचनों, सजावट से योगीराज श्री कृष्ण का हमारे हृदयों में सम्मान रहा है या नहीं और क्या इस प्रकार से हम उसके चरित्र का अनुकरण करने के लिये आकर्षित होते हैं या नहीं। इस उत्सव का ठीक प्रकार से विवेचन करने के लिए पहले हमें इतिहास का अध्ययन कर श्रीकृष्ण के यथार्थ चरित्र से अवगत होना चाहिये।

महाभारत काल में एक समय ऐसा आया जब इन्द्रप्रस्थ के राजा युधिष्ठिर ने चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए राजसूय यज्ञ का आयोजन किया, तब सभी विद्वानों से अग्रपूजा का अधिकारी इस यज्ञ में कौन हो सकता है, यह जानने के लिए मन्त्रणा हुई। सभी विद्वान, आचार्यगण, गुरुजन, पितामह भीष्म आदि एकमत थे कि इस समय सारी पृथ्वी पर श्रीकृष्ण जैसा वेद, वेदांग, विज्ञान और बल का धनी, महादानी, विनम्र, शस्त्र और शास्त्र विद्या दोनों में पारंगत, साहसी, नीति-निपुण, कीर्ति, बुद्धि आदि गुणों में समकक्ष अन्य कोई नहीं है। प्रस्तुत है महाभारत ग्रन्थ के सभा पर्व का यह श्लोकः

वेद, वेदांग, बलं चाप्याधिक तथा
नृणां लोको न को अन्य अस्ति विशिष्टः केशवा दृते
दानं, दाक्ष्यं, श्रुतं शौर्यं हीः कीर्ति बुद्धिरूत्तमा,
सन्नतिः श्रीर्धतिस्तुष्टिः पुष्टिश्च नियताच्युते।

इसी महाभारत ग्रन्थ का चिन्तनपूर्वक अध्ययन करने से पता चलता है कि वासुदेव श्री कृष्ण अत्यन्त अनुकरणीय व्यक्तित्व वाले पुरुष, महानायक तथा सभी मानवों के लिये अति पूजनीय है। वह साहस, वीरता, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, निर्लोभता, शांतिप्रियता की प्रतिमूर्ति थे। वह वेदज्ञ थे। जुए और मद्यपान के दृढ़ विरोधी थे। सच्चे ईश्वरोपासक तथा गोपालक थे।

जिस समय उनका जन्म हुआ उस काल में वैदिक संस्कृति का बिखराव आरम्भ हो चुका था। इस आर्यावर्त की पुनीत धरा पर ही वेदों में वर्णित विधि का उल्लंघन स्वीकार होने लगा था और जिसके कारण यह संगठित राष्ट्र विभिन्न स्वतन्त्र मण्डलों में विभक्त हो चुका था। माण्डलीक राजा स्वच्छन्दता से प्रजा पर वेद विरूद्ध नियम थोपकर अत्याचार करने में लिप्त थे। मगध का राजा जरासंध, मथुरा का कंस, चेदि देश का शिशुपाल, प्राग्ज्योतिष (असम) का नरकासुर या हस्तिनापुरका धृतराष्ट्र स्वार्थी, दुराग्राही व धन लोलुप बन प्रजापीड़क हो चुके थे। बड़े-बड़े विद्या-विशारद, ब्राह्मण, गुरु अपने-अपने कर्तव्यों से भटक अर्थ के दास बन राजाओं की चाटुकारिता जैसे निम्न कार्यो में संलग्न थे। चाहे द्रोपदी का चीरहरण का समय या महाभारत के युद्ध का अवसर हो जननायक विद्वत् जन धर्म-अधर्म का भेद करना ही भूल गये थे। सामान्य नागरिकों को सत्यपथ यानि धर्म का मार्ग दिखलाने वालों का सर्वथा अभाव हो चुका था। परिणामतः चक्रवर्ती राजाओं की जन्मस्थली अब छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटकर स्वरक्त पिपासु हो चुकी थी।

इन विषम परिस्थितियों में यह महामानव श्रीकृष्ण की ही दूरदृष्टि और पुरुषार्थ का परिणाम था कि खण्ड-खण्ड में विभाजित हो चुका यह शिरोमणी राष्ट्र उन्होंने पुनः एकसूत्र में पिरोकर महाभारत की स्थापना की थी। धर्म का राज्य पुनर्जीवित किया, सज्जनों की रक्षा और दुष्टजनों के विनाश का वातावरण बनाया। कुरूक्षेत्र के मैदान में जब अर्जुन जैसा योद्धा किंकर्तव्यमूढ़ हो गया, स्वजनों के प्रति आसक्त हो धर्मपालन से मना कर दिया तो श्रीकृष्ण के ही प्रसिद्ध गीतोपदेश ने उसे फिर से कर्तव्यपारायण बनाया। गीता में बताये गये सूत्र मनुष्य मात्र को ऐसे वेदानुकूल जीवनदर्शन से अवगत कराते हैं जो आज भी हमारे सर्वांगीण (आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय) विकास के लिए अनुपम मार्गदर्शन करते हैं।

ऐसे विशेष व्यक्ति देवकी पुत्र का जन्म आज से लगभग 5240 वर्ष

शेष अगले पृष्ठ पर

पूर्व वसुदेव के कुल में बड़ी विकट परिस्थितियों में हुआ। उन्होंने युवा अवस्था में बहुत संघर्ष कर अपने माता-पिता और प्रजा को अत्याचारी राक्षसों से बचाया। ऋषि सान्दीपनी के गुरुकुल में रह आर्ष पद्धति अनुकूल विद्या प्राप्त की। जीवन में केवल एक ही विवाह विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री रूकमणी से किया। श्री कृष्ण-रूकमणी ने बड़ी तपस्या के उपरांत पुत्र प्रद्युमन को प्राप्त किया। उनके पौत्र का नाम अनिरूद्ध था और प्रपोत्र का नाम वज्र था जो बाद में इन्द्रप्रस्थ का भी सम्राट बना। उनकी पालने वाली माता यशोधरा के भाई रायण की अर्धांगनी राधा उनकी मामी लगती थी। मीरा नामक चरित्र का महाभारत या किसी अन्य ऐतिहासिक पुस्तकों में कोई विवरण नहीं मिलता। सोलह हजार आठ सौ रानियों या माता तुल्य गोपियों के साथ अभद्र व्यवहार का तो हमारे आर्ष साहित्य में कोई उल्लेख लेशमात्र भी नहीं है। ऐसा महानायाक, जनसेवक, अनुपम चरित्र का धनी सारे भूगोल पर सबका वन्दनीय है। महर्षि दयानन्द इस दिव्य पुरूष को श्रद्धांजलि देते हुये सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं **"देखो ! श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनके गुण, कर्म, स्वभाव व चरित्र आरती के सदृव्य हैं। जिनमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण ने जन्म से मृत्युपर्यन्त कुछ भी बुरा कर्म किया हो ऐसा नहीं मिलता।"**

परन्तु अब देखें इस उत्कृष्ट चरित्र के शिरोमणी को किन कृत्यों का कर्त्ता बताकर वर्तमान की जनता में सुसज्जित किया जाता है। इसके लिये कुल अठारह पुराणों में से दस पुराण तथा गोरखपुर गीता प्रैस से प्रकाशित पुस्तकों का अवलोकन करें।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में लिखा है:

"साक्षात्जारश्य गोपिनां दुष्टः परलम्पटः।
आगत्य मथुरां कुब्जा मैथुनेन च।।"

विष्णु पुराण भी पीछे नहीं है देखिये श्री कृष्ण को बताया है:

"गोपालः कामीनीः जारः चौरः शिखामणी।

यहां तो केवल एक-एक श्लोक से आक्षेपों का दिग्दर्शन कराया है। ऐसे निकृष्ट श्लोकों की गिनती सहस्रों में है ओर ऐसे श्लोकों का अग्रणी है भागवत् पुराण। उसमें ऐसे कुकृत्यों को श्रीकृष्ण पर आरोपित किया है जिनकी चर्चा भी यहां करना बहुत अशोभनीय है। इन्हीं पुराणों में वर्णित निकृष्ट भावनाओं के अनुरूप ही फिर हमारे गीतकारों एवं कवियों ने गीत/कविताओं की रचना की। उदाहरण स्वरूप जन्माष्टमी के उत्सव पर जगह-जगह बजने वाले कुछ प्रसिद्ध गीतों को एक बार स्मृति पटल पर दोहरायें :-

1. **मोहे पनघट पे नन्दलाल छेड़ गयो रे।**
2. **बड़ी देर भई नन्दलाला तेरी राह तके बृजबाला**
3. **राधा रमन हरि गोविन्द जै-2**
4. **राधिका गौरी से ब्रज की छोरी से**
5. **गोविन्द आला रे आला जरा मटकी संभाल ब्रज बाला**
6. **मनियारी का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया**
7. **लूट के ले गया दिल जिगर-सांवला जादूगर।**
8. **इक मीरा इक राधा दोनों ने.....आदि आदि।**

पुराण और अन्य अभद्र पुस्तकों में उल्लेखित इन काल्पनिक आक्षेपों ने संस्कृति के रक्षकों को बहुत व्यथित किया है। प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिम चन्द्र चटर्जी लिखते हैं कि श्री कृष्ण का चरित्र पुराणों के कारण बहुत निंदित हुआ है। लाला लाजपत राय की राय में वह वैदिक संस्कृति का पुरोधा निरन्तर अपने भक्तों के अत्याचार का शिकार हो रहा है। महाकवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कहते हैं **"आधुनिक विचार वाले लोगों को यह प्रिय नहीं कि आप पंक्ति-पंक्ति में तो श्रीकृष्ण को एक तरफ ब्रह्मा लिखें और दूसरी तरफ उनको ऐसे कार्यों का कर्ता बतावें कि साधारण विचार करने वाले को घृणा हो जाये।"** तुलसीदास भी उनकी इस छवि को स्वीकार नहीं करता।

लिखते है- **"कहां कहूं छवि आपकी भली बने हो नाथ।**
तुलसी मस्तक तब झुके धनुषबाण लो हाथ।"

विख्यात कवि मैथिली शरण गुप्त श्रेष्ठ पूर्वजों के चरित्र हनन पर अपनी अंतर्वेदना अपनी कविता 'भारत भारती' में यू व्यक्त करते हैं :-

हम जो हुये पतित तो दुर्भाव यूं भरते गये,
सुकुमार भावी सृष्टि को भी वो पतित करते गये।
हाँ! उच्च भावों का क्रम आज भी है खो रहा,
अश्लील ग्रन्थों से हमारा शील चौपट हो रहा।
सोचें हमारे अर्थ हैं ये बात कैसे शोक की,
श्री कृष्ण की हम आड़ लेकर हानि करते लोक की।
भगवान को साक्षी बनाकर यह अंगोपासना,
है धन्य ऐसे कविवरों को, है धन्य उनकी वासना।।

इसलिये यदि स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार लिखते हैं :-

"वाह रे भागवत बनाने वाले लाल भुज्जकड़, मिथ्या लिखते हुये तनिक लज्जा भी न आई-निपट अन्धा हो गया.....इनके बनाने वाले जन्मते ही व गर्भ में ही नष्ट क्यों न हो गये। यदि इन पापों से बचते तो आर्यावर्त देश दुखों से बच जाता" तो कदापि अनुचित नहीं है अपितु यही सत्यवादिता है।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा द्वारा विभिन्न विद्यालयों में छात्रों को वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी

जरा इतना बता दो ईश्वर

जरा इतना बता दो ईश्वर
लगी ये कैसी लगा रहे हो।
मुझी में रहकर मुझी से अपनी
ये खोज कैसी करा रहे हो।।

हृदय भी तुम हो तुम्ही स्पन्दन
प्रेम तुम हो तुम्ही प्रेमी।
पुकारता मन तुम्हीं को क्यों फिर
तुम्हीं जो मन में समा रहे हो।।

प्राण तुम हो तुम्ही प्रियतम
नयन भी तुम तुम्ही मधुबन
तुम्हें पुकारूँ तुम्ही को ढूँढू
अजब ये लीला करा रहे हो।।

भाव भी तुम हो तुम्ही वन्दना
संगीत तुम हो तुम्ही हो रचना।
स्तुति तुम्हारी तुम्हें सुनाऊँ
यह कैसी पूजा करा रहे हो।।

जरा तो इतना बता दो ईश्वर...
लगी ये कैसी लगा रहे हो।।
जरा तो इतना बता दो ईश्वर...
लगी ये कैसी लगा रहे हो।।

–कुलदीप आर्य, गाँव नगूरां, जनपद जींद, हरियाणा

08 अगस्त-06 सितम्बर 2017 **भाद्रपद** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	धनिष्ठा कृष्ण प्रतिपदा 8 अगस्त	शतभिषा कृष्ण द्वितीया 9 अगस्त	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण तृतीया 10 अगस्त	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण चतुर्थी 11 अगस्त	उत्तराभाद्रपदा/रेवती कृष्ण पंचमी 12 अगस्त	अश्विनी कृष्ण षष्ठी 13 अगस्त
भरणी कृष्ण सप्तमी 14 अगस्त	कृतिका कृष्ण अष्टमी 15 अगस्त	राहिणी कृष्ण नवमी 16 अगस्त	मृगशिरा कृष्ण दशमी 17 अगस्त	आर्द्रा कृष्ण एकादशी 18 अगस्त	पुनर्वसु कृष्ण द्वादशी/त्रयोदशी 19 अगस्त	पुष्य कृष्ण चतुर्दशी 20 अगस्त
आश्लेषा कृष्ण अमावस्या 21 अगस्त	मघा शुक्ल प्रतिपदा 22 अगस्त	पू० फाल्गुनी शुक्ल द्वितीया 23 अगस्त	उ० फाल्गुनी शुक्ल तृतीया 24 अगस्त	हस्त शुक्ल चतुर्थी 25 अगस्त	चित्रा शुक्ल पंचमी 26 अगस्त	स्वाती शुक्ल षष्ठी 27 अगस्त
विशाखा शुक्ल सप्तमी 28 अगस्त	अनुराधा शुक्ल अष्टमी 29 अगस्त	ज्येष्ठा शुक्ल नवमी 30 अगस्त	मूल शुक्ल दशमी 31 अगस्त	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल दशमी 1 सितम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल एकादशी 2 सितम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल द्वादशी 3 सितम्बर
श्रवण शुक्ल त्रयोदशी 4 सितम्बर	धनिष्ठा शुक्ल चतुर्दशी 5 सितम्बर	शतभिषा शुक्ल पूर्णिमा 6 सितम्बर	श्री कृष्णचन्द्र जयन्ती भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (15 अगस्त)			

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj A rya, Delhi

The scope of this book does not permit going into all the detail of Dayanand's wanderings in quest of soul. For full fifteen years from 1845 to 1860, young Dayanand wandered almost all over India. He went from place to place inquiring about yogis and sudhus. Whenever he learnt that at a certain place there lived a yogi or a sanyasi, he would dash for it. He visited all the Hindu places of pilgrimage, and some he visited more than once. In his ceaseless search for scholars of renown and men of wisdom, he searched the innermost part of the Himalayas, the Vindhyas and the Aravallis. He had to encounter great dangers in his travels, but he never lost his presence of mind. There were dangers when a petty slip of the foot might plunge him over a precipice into the roaring torrent below. At some places he would find his way back to thick growth of thorny, blushes but undaunted, he would move on, walking through prickly thorns, which literally tore his flesh into shreds. On winter nights, in benumbing cold the young wanderer would be seen wending his lonely way, with surprisingly inadequate clothing. For days and he had nothing to eat but what our hero received in the lap of nature during this period of his life. It fitted him for the life which he was to lead in the years to come.

Once on his way to the Himalayas, Dayanand happened to halt at the famous Okhi Math. The Mahant (owner or caretaker of a religious place) of the Math was impressed by the personality and wisdom of Dayanand. Anxious to keep him as his disciple, he gave him a very tempting offer.

"If you become our disciple," he said, "you will be the master of all our wealth. Thousands of our followers will be at your service."

The offer held out a brilliant prospest of a happy future. But the Mahant did not know that Dayanand was not the man to be seduced by these allurements. The latter's reply gives us a glimpse into his character.

"Mahantji, did you think it is for this pleasure that I discarded all my worldly possessions and comforts ? You seem to have no idea of the treasures, far more valuable than these, for sake of which I have voluntarily given up the opulence of my paternal home. Tempt me not, for my heart is set for the acquisition of true knowledge."

The Mahant had never witnessed such profound contempt for wealth, and dumb-founded. He praised Dayanand's strengh of purpose and requested him to stay for a few days. But Dayanand declined. And after sometime he reach Mathura in the Pathshala (school) of great Swami Virjanand.

Virajanand- is the name of our Blind monk who was brought up in the lap of adversity. He was born in the house of a brahmin, Narain Dutt by name at Kartarpur. He was five years old when he had an attack of small-pox which left him blind for life. But worse was to follow. He was hardly eleven when the deaths of his father and mother left him an orphan. He was now at the mercy of his brother, whose wife happened to be a very selfish and short tempered woman, who would often torment the poor boy and hint that he should better leave her house. His brother was too timid to protest and he felt that both of them wanted to get rid of him. He was conscious of his helplessness and yet was too spirited to submit to this. Sad at heart, he bade good-bye to his paternal home, and cast himself without any support in the wide world.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

सत्र में आने के पश्चात् मुझे यह ज्ञान होता है कि हम आर्यों की संतान हैं और हमें अपने श्रेष्ठ पूर्वजों (आर्यों) का अनुसरण करना चाहिए। ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान चेतन सत्ता है। मूर्ति पूजा, पीर-मजार आदि पर जाना या इनकी पूजा करना पाप है। निराकार ईश्वर की भक्ति करना उचित है। ईश्वर का संविधान वेद है। वेद का अनुसरण ही हमें करना चाहिए। वेद की आज्ञाओं का पालन करना ही धर्म है तथा इनका पालन न करना या इन्हें न मानना अधर्म है।

राष्ट्रीय आर्य निमात्री सभा को मेरा सिर्फ एक ही सहयोग है कि मैं अपने मित्र को इस सभा में लेकर आया।

नाम : दीपक, आयु: 16 वर्ष, योग्यता: कक्षा 12, पता : गोपाल पुर खडाना, बागपत

सत्र का अनुभव अच्छा रहा। ईश्वर को जाना, ईश्वर की वाणी वेदों के बारे में पता चला। आर्य सिद्धान्तों का पता चला। अपने पूर्वजों के सिद्धान्त व धरोहर की जानकारी मिली। अपनी मातृभूमि की रक्षा कैसे हो की जानकारी प्राप्त हुई। अन्य महत्वपूर्ण विषयों की भी जानकारी मिली।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के द्वारा ज्ञान ज्योति जलाने की अलख में मैं सर्वप्रथम (सत्यार्थ प्रकाश) नामक पुस्तक व संस्कृत भाषा व व्याकरण का अध्ययन व अध्यापन करने व कराने का संकल्प लेता हूँ। ईश्वर मेरी मदद करे।

नाम: सूर्य आर्य, आयु: 35 वर्ष, योग्यता: एम. ए., बी.ए., पता: किरठल

आज से पहले बहुत बार सोचा भी था, विचार भी बहुत आए थे लेकिन वे विचार केवल कुछ समय के लिए थे। जब कोई बहुत क्रान्तिकारी के बारे में बताता था या देश की व्यवस्था के बारे मे बताता था तो मन में लहर तो बहुत कुछ करने की उठती लेकिन बिना किसी के सहारे और लक्ष्य के कुछ देर बाद वैसे ही हो जाता था। यह सब कुछ मेरे विचारों से हट कर था, अलग था। लेकिन सत्य था वेदों के बारे में सुना था देखा नहीं था और अब इन्हें पढ़ने की इच्छा हो रही है। मैं पहले सत्र में नहीं आया था तब मैं नशा भी करता था लेकिन मेरे को अपने ऊपर आत्मविश्वास नहीं था, लेकिन अब मैंने अपना लक्ष्य आर्य बनने का बनाया है। और अब अपने आत्मविश्वास को जगाया है। और अब मैं नशा भी नहीं करूंगा। मुझे यहा बहुत कुछ लाभ हुआ।

समाज में मैं अपने पूरे तन-मन-धन से जिस भी प्रकार से मेरी जरूरत होगी बिना कुछ भी प्रश्न किये सेवा में उपस्थित रहुंगा।

नाम: मोहित राणा, आयु: 22 वर्ष, योग्यता : बी.एस.सी., पता: सोहटी, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा

आर्य प्रचारक कक्षा करनाल में आचार्य धर्मपाल जी व प्रचारकगण

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के लिए प्रचारकों की कक्षा (23 जुलाई 2017)

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

आर्य प्रचारक कक्षा

जिन आर्यों का पंजीकरण पिछले वर्ष आर्य प्रचारक के लिए हो चुका है और इनमें से जिन्होंने अभी तक प्रचारक कक्षा का पाठ्यक्रम पूरा नहीं किया है उनके लिए अन्तिम अवसर के रूप में एक सप्त दिवसीय आर्य प्रचारक कक्षा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम एक साथ पूरा कराया जायेगा। इसके उपरान्त उनका पुराना पंजीकरण निरस्त हो जायेगा तथा नये पंजीकरण व शुल्क के बाद ही आगे की कक्षाओं में अनुमति रहेगी। अत: सभी पंजीकृत आर्यगण इस अन्तिम अवसर का लाभ उठाएं और पाठ्यक्रम को पूरा करें।

इस कक्षा में दिल्ली, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश को छोड़कर अन्य क्षेत्रों के नये पंजीकृत आर्यों को भी अनुमति रहेगी। सभी आर्यगण पाठ्यक्रम की सभी पुस्तकें (सत्यार्थ प्रकाश, आर्योद्देश्यरत्नमाला, समाज, ऋषिकृत् लघुग्रन्थ संग्रह-इनमें से जो उपलब्ध हो), अपनी डायरी व कटिवस्त्र-उत्तरीय लेकर 20 अगस्त 2017 को सायं:काल 6 बजे तक गुरुकुल में अवश्य उपस्थित हों।

20 अगस्त 2017 से 27 अगस्त 2017 तक

स्थान : आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय
चित्तौड़झाल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

कक्षा में सम्मिलित होने के लिए निम्न आचार्यों को सूचित कर अनुमति लेवें।

आचार्य संजीव जी	आचार्य सतीश जी	आचार्य महेश जी	आचार्य धर्मपाल जी
(पश्चिमी उत्तर प्रदेश)	(दिल्ली)	(दक्षिणी हरियाणा)	(उत्तरी हरियाणा)
9412486428	9350945482	9813377510	9812905265

अन्य क्षेत्रों के आर्यगण पं. लोकनाथ जी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) 7015563934 से सम्पर्क करके अनुमति लेवें।

विभिन्न स्थानों पर श्रावणी पर्व के कार्यक्रम

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।